DR. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
Deptt of History
B.A Part - II
paper - 8
Topic - Chalukya - Pallav Sangharsh.

चालुक्य - पल्लव संघर्ष पर प्रकाश डालिए ?

जिस तरह उत्तर भारत में पाल, प्रतिहार (कन्नौज) के लिए और राष्ट्रकूट शासक प्रकाश में आयें। लगभग दो सौ वर्षों तक "त्रिपक्षीय संघर्ष" किया। इस संघर्ष का मूल कारण आर्थिक बना। ठीक उसी प्रकार पल्लव और चालुक्य

— x — x — x —

छठी सदी से आठवीं सदी तक प्रायद्वीप भारत के राजनैतिक इतिहास के आकर्षण का मुख्य केन्द्र कांची के पल्लवों और बादामी के चालुक्यों के और पाण्ड्य बीच प्रभुसत्ता को लेकर संघर्ष चलता रहा। जिस तरह उत्तर भारत में पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट कन्नौज के लिए 'त्रिपक्षीय संघर्ष' किया। ठीक उसी प्रकार इन लोगों ने भी प्रतिष्ठा और आर्थिक संसाधन के लिए संघर्ष किया। नरवण और पट्टडकल के लेखों में इस आक्रमण का उल्लेख प्राप्त होता है। पाण्ड्य राज्यवंश चूँकि कमजोर था। इसलिए उसका ज्यादा उल्लेख नहीं मिलता है। *

[illegible]

उपजाऊ भूमि के कारण :- दक्षिण भारत में ज्यादातर पहाड़ी इलाका था। कुछ उपजाऊ भूमि की काफी कमी थी। इसलिए कृष्णा और तुंगभद्रा के दोआब पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश की। क्योंकि कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के बीच का भाग रायचूर और दोआब तथा वेंगी का क्षेत्र काफी उपजाऊ थी। कुछ उपजाऊ होने के चलते इस पर अधिकार करने के लिए पल्लव व चालुक्य संघर्ष लगातार होते रहते थे।

भौगोलिक कारण

पहाड़ पठार और नदी के कारण भौगोलिक बाधा को तोड़कर सम्पूर्ण कृष्णा और तुंगभद्रा नदी में दक्षिण भारत के दो प्राकृतिक भूखण्ड में विभाजित कर रखा था। इस प्राकृतिक सीमांत को पार कर पल्लव और चालुक्य राज्यवंश आपस में संघर्ष करते रहते थे। जो पाण्ड्य का साथ देता था वह विजय हो जाता था।

आर्थिक कारण

दक्षिण भारत के अधिकांश बन्दरगाह इसी भाग में स्थित थे। जिस से राज्य को काफी आमदनी होती

थी। निर्यात योग्य माल का उत्पादन इसी क्षेत्र में होता था। रायचूर और दोआब का इलाका हीरा और लोहा जैसे बहुमूल्य खनिज के लिए प्रसिद्ध माना जाता था। अतः संघर्ष का कारण आर्थिक सम्प्रदाय भी था।

महत्वकांक्षी शासकों के कारण

कृषि और व्यापार पर नियंत्रण इस राज्यवंश के शासक करना चाहता थे। दक्षिण भारत की इन तीन शक्तियों का अंत लगातार संघर्ष के कारण हुआ। ये शक्तियां धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। पल्लव पर चोल का अधिकार हो गया, और चालुक्य पर राष्ट्रकूट का।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार हम कह सकते है कि पल्लव व चालुक्य का संघर्ष एक महत्वपूर्ण संघर्ष था।

पल्लव साम्राज्य की राजनीतिक शक्ति को देखते हुए सर्वप्रथम पुलकेशिन II ने पल्लवों पर आक्रमण की योजना बनी, जिसमें उसने न केवल कांची नगरी को नष्ट किया बल्कि समृद्धि व गरिमा को भी किया। दूसरी तरफ राष्ट्रकूटों ने भी इस युद्ध में कांची के विरोधी चालुक्यों को सहयोग दिया। और अन्त में नंदिवर्मन के सेनापति उसे परास्त कर पल्लव राज्यवंश की जगह पर चोल वंश स्थापित किया।